

*sich hingeben*: को नानाम वचसा सोम्याय RV. 4, 25, 2. विश्वमस्या नानाम चर्तसे जगत् 4, 48, 8. यावो चिदस्मै पृथिवी नमते 2, 12, 13. इयं ते पृथिवी नैम श्रोतसे 1, 57, 5. सुमेभिर्स्मे वसवो नमधम् 7, 56, 17. न वीर्ये नमते न स्थिराय 6, 24, 8. 10, 34, 8. एवेयूने युवतयो नमत् 30, 6, 31, 9. 128, 1. तस्मै विशः स्वयमेव नमते 4, 50, 8. — तस्मै नमति भूतानि BHĀG. P. 4, 9, 47. समुद्रनेमिर्नमते तु तस्मै MBh. 3, 977. 5, 1130. 12, 13109. BHĀG. 11, 37. नत्वा कृत्वा BHĀG. P. 7, 1, 5. भयान्नमति राजानो यस्य स्म MBh. 10, 495. R. 6, 12, 11. सर्वभूतानि चाप्यस्य न नमते कदाचन MBh. 3, 1036. 10622. महेन्द्रविज्जुभिर्गता नमामि HARIV. 10235. R. GORR. 2, 58, 37. KUMĀRAS. 6, 89. KATHĀS. 1, 44. BHĀG. P. 1, 4, 11. 2, 3, 21. 4, 9, 45. MĀRK. P. 23, 104. 25, 2. ÇIC. 4, 57. BHĀṬṬ. 9, 51. 10, 31. 12, 39. NĀLOD. 4, 44. नमस्वेनम् (das einzige Beispiel des med. beim acc.) MBh. 3, 1200. उपेत्य ज्ञानिनं तं च नत्वा KATHĀS. 25, 82. विप्रावत्वा तिलगोमूमिरुक्तेः BHĀG. P. 1, 13, 29. ohne Object: नमद्भिः BHARTS. 3, 61. BHĀG. P. 1, 7, 42. अशक्तः संधिमात्रमेतु KĀM. NĪTIS. 8, 55. उन्नमति नमति वर्षति गर्जति मेघः करोति तिमिरौधम् । प्रथमश्रीरिव पुरुषः करोति त्रयाण्येनकानि || *neigt sich, senkt sich* MĀRKĀH. 83, 11. अर्नसोर्ध्वरेणास्य BHĀṬṬ. 13, 25. *sich krümmen* SUÇR. 1, 254, 7. 11. नत *gebogen, gekrümmt* AK. 3, 2, 20. H. 1436. an. 2, 176. MED. t. 29. विलज्जमानेव नता HIP. 2, 23. मूर्धभिर्नताः HARIV. 11768. R. GORR. 2, 18, 55. चरणनताभिस्ताभिः KATHĀS. 26, 278. अस्माकं तावकानां तव (vor dir) नतानाम् BHĀG. P. 6, 9, 40. नतो ऽस्मि तम् (vor ihm) 5, 18, 4. 1, 11, 6. 8, 12, 47. घनपोनपयोधरभारनता ÇRUT. 28. भयलज्जानतानन PAÑĀT. 46, 5. RĀGA-TAR. 3, 202. 372 (wo एका नतमुखी zu lesen ist). DHŪRTAS. 72, 8. H. 1247. पुष्पभारनता लता R. 2, 96, 15. स्वयंनता श्रेष्ठीका ÇĀNKH. ÇB. 17, 3, 11. इन्द्रणतेष्ठीका LĀṬJ. 4, 1, 7. PAÑĀV. Br. 15, 5, 20. नतधू VIKR. 93. DRAUP. 3, 1. VARĀH. BRH. S. 67, 68. वामनत *nach links gekehrt* 7. tief *herabhängend*: स्वाडुत्तीरनतोधसः (गावः) DHŪRTAS. 96, 11. *eingefallen, nicht hervorstehend, vertieft*: शराणां नतपर्वणाम् MBh. 5, 7143. ÇĀK. 162 (wo अधुना नत° zu lesen ist). नतोद्गर MBh. 7, 2735. नतनाभिः KUMĀRAS. 1, 38. नतोन्नतभूविभागे मार्गे ÇĀK. 90. ललाटे न नतं न तुङ्गम् VARĀH. BRH. S. 68, 8. नताग्रनास 26 (25), 14; vgl. नतनासिक. n. *Senkung, Neigung* SŌRJAS. 12, 72. — 2) *sich wegbeugen, ausweichen*: किरुड्मत्तु शत्रवः AV. 4, 3, 1. mit instr. der Sache: विश्वस्य शत्रोरनमं वधुनैः RV. 1, 163, 6; vgl. caus. — 3) *beugen, biegen*: नेमिं नमति चर्तसा RV. 8, 86, 12. — 4) *gramm. umbiegen* so v. a. *einen Dentalen in einen Cerebralen umwandeln*: ऋकाररेफकारा नकारे समानपदे ऽवगृह्ये नमति RV. Prāt. 5, 20. pass. नम्यते 10. नत *umgebogen, in einen cerebralen Laut verwandelt* 1, 15. 4, 12. 5, 26. — 5) *tönen* (vgl. नद्) DHĀTUP.

— caus. नमयति und नमयति DHĀTUP. 19, 67. VOP. 18, 23 (mit präpp. angeblich nur *namayati*): ननमस् und नीनमस्. 1) *sich beugen machen, beugen, biegen*: तैरिमां लोकाननमयन् ÇAT. Br. 7, 4, 26. प्रोतुङ्गात्रमयन् NAVAR. 9 in HARB. Anth. 3. नमयन्मूढन् KATHĀS. 19, 89. 3, 77. नम्यते ऽस्मै कामाः TAITT. UP. 3, 10, 3. पवमानः पृथिवीरुक्तानिव — नमयामास नृपान् RAGH. 8, 9. लज्जया चापि नामितः R. 4, 60, 3. नमयति स्म स केवलमुन्नतं शिरः RAGH. 9, 18. स्तोनादहनसंज्ञोभात्रमयमाना (नाम्यमाना INDR. 5, 9) पदे पदे MBh. 3, 1825. नमयति मुखम् AMAR. 37. न नामयति (अङ्गानि) PĀR. GRHJ. 1, 16. नमिताङ्ग R. 3, 79, 22. लता नामयति MĀRKĀH. 134, 20. नम्यमान BHĀG. P. 5, 17, 13. नमित MRGH. 73. नामित MĀRKĀH. 13, 19. नानाम्यं

IV. Theil.

नाम्यते दाह PAÑĀT. I, 430. श्वपुच्छमिव नामितम् HIT. II, 130. नमितघ्नः MALLIN. zu KUMĀRAS. 6, 7. घटे नमयति *neigt* Schol. zu ÇĀK. 11, 9. धनुः, चापम् *den Bogen biegen, spannen* MBh. 3, 3039. HARIV. 4506. R. 4, 32, 11. 5, 93, 16. 6, 80, 17. ÇĀK. 36. RAGH. 11, 72. *bewirken, dass Etwas sinkt, einsinkt*: नामयंश्चरौर्महीम् HARIV. 3754. KUMĀRAS. 6, 50. SĪH. D. 38, 11. नाम्यति mit act (!) Bed.: फुल्लो नाम्यति वायसो ऽपि हि लता या नामिता वर्किणा MĀRKĀH. 13, 19. — 2) *ablenken, abbiegen*: वधुर्दासस्य नीनमः RV. 8, 24, 27. ननमो वधुर्देवस्य पीयोः 1, 174, 8. 2, 19, 7. — 3) *gramm. umbiegen* so v. a. *einen Dentalen in einen Cerebralen umwandeln*: नमयति दत्त्यं सत्तं मूर्धन्यं कुर्वतीति नामिनः Schol. zu RV. Prāt. 1, 17. — 4) *ausweichen, mit intr. der Sache* (vgl. simpl. 2): उद्ग्राभस्य नमयन्वधुनैः RV. 9, 97, 15. यो देह्योऽर्नमयद्वधुनैः 7, 6, 5.

— intens. *sich beugen, sich neigen; sich zuneigen*: इन्द्राय हि यौरसुरो अर्नमत् RV. 1, 131, 1. यस्य वृते पृथिवी ननमीति 5, 83, 5. जिह्वाभिरुक् ननमदृर्षिषा जज्ञणाभवं 8, 43, 8. घृतर्मेन अन्नननममाने 10, 82, 1. ननमुः AIT. Br. 2, 20. ÇAT. Br. 3, 9, 31. (श्रापः) ननम्यधं यजमानाय KĀTJ. ÇR. 23, 3, 1. ननम्यमानाः फलदित्तमेव चकाशिरे तत्र लताः BHĀṬṬ. 2, 25.

— अति *bei Seite halten*: अतिनत्येव पात्राणि ÇAT. Br. 1, 1, 4. — अधि intens. *sich hinbeugen über*: भूयन् यो ऽधि वधूषु नमते RV. 1, 140, 6.

— अनु *sich zuneigen*: अनु स्वधुनैः क्षित्तियौ नमत् RV. 5, 32, 10. — अप, partic. *ausgebogen*: (यूपः) आनत उपरिष्ठादपनतो मध्ये ÇAT. Br. 14, 7, 3. ÇĀNKH. Br. 10, 1.

— अभि *sich zu Jmd hin verneigen*: शिरसाभ्यनमत् INDR. 2, 19. *sich Jmd zuwenden*: देवान्वै यज्ञो नाभ्यनमत् und अभ्यनान् 3 sg. aor. KĀṬH. 8, 10. अभिनत *geneigt, gebeugt*: °काय SADDH. P. 4, 3, b. अभिनत इवोदरेणा (लुधितः) ÇĀNKH. Br. 10, 1.

— अव 1) *sich herabbeugen, sich verbeugen*: अवनमत् BHĀG. P. 5, 25, 4. अवनम्य KATHĀS. 19, 92. ÇIC. 9, 74. अवनत् *gebogen, gebogen, gesenkt* AK. 3, 2, 20. H. 1436. प्रअयावनत् MBh. 3, 1776. BHĀG. P. 1, 13, 6. MĀRK. P. 27, 3. विनयावनत् MBh. 1, 3, 3, 2467. लज्जयावनताभवत् R. 6, 101, 2. अवनतानन MBh. 1, 6121. RAGH. 9, 60. त्वयादातुं जलमवनते MRGH. 47. (विल्वान्) फलपुष्पैरवनतान् R. 2, 86, 7. 5, 17, 10. PAÑĀT. 159, 19. अवनताङ्गी *gekrümmt* KUMĀRAS. 5, 86. वामावनता *nach links gebogen, — gerichtet* VARĀH. BRH. S. 58, 51. *vertieft, nicht hervorstehend*: गुल्फौ चावनतौ मम R. 6, 23, 12. — 2) *herabbeugen, herabbiegen*: केचिच्छ्रातेभयाच्छिरास्यवननामिरे MBh. 1, 5336. — Vgl. अवनति, अवनन. — caus. Jmd *sich verbeugen lassen, herabbiegen*: अवनमितविधुताशेषभूद्रपा in einer Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 9, Cl. 32. शिरःसु कृत्वा जग्राह स्वकृत्तेनावनान्य च HARIV. 3685. अवनामितमेकस्य मेढ्रे (विध्येत्) SUÇR. 1, 359, 10. श्वपुच्छमवनामितम् PAÑĀT. ed. orn. I, 255. VARĀH. BRH. S. 50, 28. वृत्तान् — अवनान्य MBh. 3, 10043. फलभारानामित (वृत्त) 1, 7586. धनुर्ग्रामवनान्य so v. a. *spannen* R. 4, 606.

— अयव caus. *herabbeugen*: अयववनान्य वक्रम् MBh. 3, 10062. — आ 1) *sich beugen, sich bücken, sich verbeugen vor*: आनम्य मूर्ध्नि चाग्राय R. 2, 25, 38. नृपतया यत आनमति BHĀG. P. 1, 15, 21. हरिमानम्य vor Hari *sich verneigend* 8, 23, 3. आनत *gebogen, geneigt, sich verneigend* AK. 3, 2, 20. H. 1436. RAGH. 1, 92. 4, 69. पादान्वै नमश्क्रतुरानतौ